मातेश्वरी नन्हीं-सी बच्ची भी और जगदम्बा माँ भी

– दादी जानकी

मम्मा को हम पहले से ही जानती थीं लेकिन जैसे कुमारका दादी (दादी प्रकाशमणि) की उनके साथ फ्रेंडशिप (मित्रता) थी, वैसे नहीं थी। वे दोनों उम्र में मेरे से छोटी हैं। मम्मा बहुत एक्टिव (चुस्त) थी, वह हम लोगों से न्यारी थी परन्तु जब ॐ मंडली में पहली बार हम ने देखा तो बहुत आश्चर्य हुआ। वह सफ़ेद फ्राक पहने हुए थी। अन्य बहनों की भेंट में मम्मा बहुत चमकती हुई नज़र आती थी। ॐ मंडली में आते ही उनका परिवर्तन देख सब को अच्छा भी लगा और आश्चर्य भी लगा। जब मैं कराची में आयी तो किसी ने मेरे से पूछा, तुम ने मम्मा को देखा है? मम्मा से मिली हो? मैंने समझा कि बाबा की युगल जशोदा माता के लिए कहा होगा। मैंने कहा, मिल लूँगी लेकिन 2-3 दिन बाद पता पड़ा कि ये लोग मम्मा किसको कहते हैं।

मम्मा सुनकर नहीं, अपने में समाकर ज्ञान सुनाती थी

एक-दो साल में मम्मा में जो परिवर्तन आया वो बहुत विचित्र बात थी। मम्मा के नयन, मम्मा के चैन, मम्मा के बोल, मम्मा का व्यक्तित्व – यह सब अलौकिकता में परिवर्तित हो गये थे। जब मम्मा ज्ञान सुनाती थी तो लगता था कि यह सिर्फ़ बाबा का सुनाया हुआ ज्ञान नहीं सुना रही है बल्कि उसको अपने में समाकर सुना रही है। एक दिन मम्मा को कुँज भवन की छत पर देखा था। मम्मा के कमरे के पास आँगन था। जब भी मैं मम्मा को देखती थी तो वह या तो छत पर या आँगन में कुर्सी पर बैठ चांदनी में बाबा से योग लगाते हुए दिखायी पड़ती थी। मम्मा को तपस्या करते हुए देख मुझे बहुत प्रेरणा मिलती थी।

मम्मा जब मुरली चलाती थी तो हम लोग ऐसे तन्मय होकर सुनते थे कि मूर्तिवत् हो जाते थे। मुरली डेढ़ घण्टा चलती थी तो हम भी एकाग्रता से बैठ सुनते थे। मम्मा की मुरली इतनी प्यारी होती थी कि बात मत पूछो। पूरे यज्ञ में देखा जाय तो मम्मा बहुत कम बात करती थी। मम्मा का यह गुण मुझे बहुत अच्छा लगता था। उस समय मैं भी बहुत कम बात करती थी। अन्तर्मुखता की यह प्रेरणा मैंने मम्मा से प्राप्त की। दूसरों के साथ बहुत कम सम्बन्ध रखती थी। कभी-कभी दीदी के साथ थोड़ा-बहुत बात करती थी। बातों-बातों में मैंने दीदी से यह कहा था कि मैं मम्मा से डरती हूँ, इसीलिए नहीं कि मैंने कोई ग़लती की थी लेकिन ऐसे ही उनके पास जाने में थोड़ी झिझक होती थी। यह मम्मा को मालूम पड़ा। एक दिन मम्मा ने मेरा हाथ पकड़ा और कहा – क्या जनक तुम मेरे से डरती हो? मैं ने कहा, डरती नहीं हूँ लेकिन कभी बात नहीं करती हूँ ना इसीलिए ऐसा कहा था! मम्मा ने कहा, अच्छा, चलो आज आपसे ज्ञान की रूहरूहान करेंगे। मम्मा हरेक के साथ इतना प्यार से और रिगार्ड से बात करती थी कि सबका मन भर आता था!

मम्मा बोलकर नहीं, ख़ुद करके सिखाती थी

मम्मा कहती थी कि जो ग़लती एक बार कर दी वो दूसरी बारी नहीं होनी चाहिए। मैंने यह गाँठ बाँध ली कि मैं मेरा रिकार्ड ऐसा रखूँ जो दुबारा मम्मा से शिक्षा लेनी न पड़े। मम्मा कभी भी कोई कार्य बोल कर नहीं सिखाती थी, ख़ुद करके सिखाती थी। एक बार हम सुबह 4 बजे नहीं उठे थे क्योंकि लौकिक जीवन में तो हम जल्दी उठते नहीं थे। ॐमंडली में आने के बाद ही सुबह जल्दी उठना सीख लिया था। मम्मा चार बजे आकर देखती थी, कोई नहीं उठा तो वे धीरे-धीरे सीढ़ी उतरकर किचन में चली

जाती थी। किसी-न-किसी को पता पड़ जाता था तब वे कहते थे, मम्मा देख कर गयी। तो हम सब उठकर तैयार हो जाते थे और मम्मा के सामने जाकर खड़े हो जाते थे। तब मम्मा मुस्करा कर कहती थी, ''देखा, आपके मंदिरों में भक्त उठकर घंटी बजा रहे हैं, आप देवता सोये पड़े हैं!'' तब से लेकर आज तक मैं अमृतवेले नहीं सोयी हूँ।

मम्मा, भोजन को परमात्म-प्रसाद समझकर स्वीकार करती थी

भोजन क्या है, कैसा है – मम्मा यह कभी नहीं देखती थी। जो मिला उसी को प्यार से स्वीकार कर लेती थी। कभी यह नहीं कहा कि आज नमक कम है, ज़्यादा है, आज सब्जी अच्छी है, अच्छी नहीं है। खाने के समय मम्मा कभी इधर-उधर नहीं देखती थी। ऐसे चुपचाप बैठी, खाया और चली गयी। भोजन को प्रसाद के रूप में स्वीकार करती थी।

मम्मा के सामने बाबा कुछ भी बात कहे, कुछ भी सुनाये, मम्मा कभी क्यों, कैसे – यह नहीं सोचती थी। सदा 'जी बाबा', 'हाँ जी बाबा' कहती थी। इतना रिगार्ड था उनका बाबा के प्रति! मैं जब पूना में थी तब मम्मा हमारे पास तीन बार आयी थी। बाबा के हर बोल पर मम्मा का अटूट विश्वास था। एक बार किसी ने मम्मा से पूछा, मम्मा, पहले बाबा कहते थे कि जहाँ जीत वहाँ जन्म। आजकल बाबा उसके बारे में कुछ बोलते नहीं, आपका क्या विचार है? तब मम्मा बोली, मेरा विचार कहाँ से आ गया? जो बाबा ने कहा है वही हम सबका विचार है। मम्मा ने कभी अपनी बद्धि का अभिमान नहीं दिखाया।

मनजीत पद्‌ममनोधारी मम्मा

पूना में ही और एक बार मम्मा से किसी ने पूछा था, मम्मा आप मन को कैसे शान्त रखती हैं? तब मम्मा ने कहा, यह मन तो हमारी छोटी बेबी है, मैं उसको कह देती हूँ कि अभी तुम शान्त रहो, जब ज़रूरत पड़ेगी तब मैं तुमको बुला लूँगी, वह चुप बैठ जाता है। ऐसे मम्मा मनजीत थी!

यह कराची की बात है, मम्मा ऑफिस में बैठी थी तो मैंने जाकर पूछा, ''मम्मा हम क्या पुरुषार्थ करें?'' तब मम्मा ने कहा, ''सदैव समझो यह मेरी अन्तिम घड़ी है।'' वो दिन और आज का दिन मम्मा का वो मंत्र मुझे भूला नहीं है कि हर घड़ी अन्तिम घड़ी है और मुझे बाबा की याद में रहना है।

गुप्तगामिनी सरस्वती माँ

मम्मा ने कभी अपना शो (दिखावा) नहीं किया। वह कितनी सेवा करती थी लेकिन कभी अपने मुँह से कहा ही नहीं कि मैंने इतनी सेवा की। मम्मा डेढ़ मास सेवा करके बेंगलोर से पूना आयी थी। उन्होंने बहुत सेवा की थी परन्तु फिर भी नहीं सुनाया कि यह-यह सेवा करके आयी हूँ। जो भाई उनको लेने गया था उसी ने थोड़ा सुनाया था। तब हमने मम्मा से पूछा, तो उन्होंने कहा – सेवा अच्छी थी। इतना ही कहा, इससे ज़्यादा कुछ नहीं कहा। इस प्रकार, मम्मा अपने बारे में, किये हुए कार्य के बारे में कभी दूसरों को नहीं बताती थी। वे जितना त्यागी थी, उतना ही वैरागी थी और उतना ही तपस्वी थी।

मम्मा को मैंने राधे के रूप में भी देखा, सरस्वती के रूप में भी देखा, काली के रूप में भी देखा और जगदम्बा के रूप में भी देखा।

शिक्षा देने की गज़ब की विधि

बाबा, सभा में अर्थात् क्लास में सभी के सामने ही समझानी देते थे। किसी को व्यक्तिगत रूप में शिक्षा देनी होती तो उनको बाबा पत्र लिख देते लेकिन मम्मा का समझाने का तरीक़ा अलग था। मम्मा उस वत्स के कानों में कह देती थी अथवा इशारा कर देती थी और बहुत प्यार से कहती थी। ऐसे नहीं कि किसी की सुनी-सुनायी बातों के आधार पर मम्मा उसको शिक्षा देती थी। मम्मा समय देकर, उसको प्यार से समझाती थी और गज़ब की बात यह होती थी कि मम्मा उस व्यक्ति को भी महसूस नहीं होने देती थी कि मम्मा मुझे किसी के कहने अनुसार शिक्षा दे रही है। मम्मा की शिक्षा को हरेक यज्ञवत्स अपनी माँ की ही शिक्षा समझकर लेता था। हरेक को लगता था कि मम्मा जो भी हमें कह रही है, हमारी भलाई के लिए। बाबा की शिक्षा बहुत शक्तिशाली होती थी, कारण कि उसको सुनने और समझने की शक्ति चाहिए। शक्तिशाली आत्मा ही बाबा की शिक्षा हज़म कर पाती थी। इस कारण, आमतौर पर किसी बच्चे को समझाना हो तो बाबा सीधा उस बच्चे को नहीं बोलते थे लेकिन उस बच्चे के

सामने ही मम्मा को कहते थे। तो वह बच्चा समझ लेता था कि मेरे कारण मम्मा को इतनी सारी बातें सुननी पड़ीं। फिर वही मम्मा से अपनी ग़लती क़बूल करता था और आगे के लिए ध्यान रखता था।

रीति-रिवाज़, सभ्यता-संस्कृति की जननी

मम्मा ने कभी बाबा को साधारण समझा ही नहीं। बाबा की हर बात को पूर्णत: सम्मान दिया और सम्मान देकर उसका पूरा परिपालन किया। कई बच्चे, बाबा की बात को बहुत साधारण रूप में लेते थे, तो मम्मा सब बच्चों को बिठाकर समझाती थी कि बाबा को साधारण समझने की कड़ी भूल कभी नहीं करना। बाबा का एक-एक बोल बहुत मूल्यवान है। ऐसे कह कर हमें सभ्यता और अनुशासन सिखाती थी। मम्मा का बोलने का तरीक़ा बहुत सम्मान, प्यार और मिठास वाला होता था। हमें मम्मा ने रीति-रिवाज़, सभ्यता-संस्कृति सिखाकर लायक बनाया और एक माँ का पार्ट बजाया और हम बच्चों का गुणों से शृंगार कर बाप के सामने रखा।

मम्मा में कौन-सी विशेषतायें थीं जो बाबा ने उन्हीं को यज्ञमाता बनाया?

मम्मा को मैंने जब से देखा तब से उनमें, श्री लक्ष्मी के सब लक्षण स्पष्ट रूप में दिखायी पड़ते थे। मम्मा सर्व दैवीगुणों से सम्पन्न थी। मम्मा को देह से न्यारी होने के अभ्यास पर बहुत ध्यान रहता था। अशरीरी बनने का जो अभ्यास मम्मा का था वो हम सब के सीखने लायक था। मम्मा के सामने कोई भी आता था कुछ बात करने के लिए, तो उसकी आवाज़ ही बन्द हो जाती थी अथवा ज़्यादा बोल नहीं पाता था।

प्यूरिटी की पर्सनालिटी, रॉयल्टी, त्याग, फ़र्ज़-अदाई में सदा नम्बर वन थी। इतनी छोटी आयु में इतना बड़ा परिवर्तन अपने में कर लेना– यह बहुत बड़ी विशेषता थी। मम्मा ने, बाबा की वफ़ादार बेटी बन कर्त्तव्य निभाने का और हम सब यज्ञवत्सों की अलौकिक माँ बन कर फ़र्ज़-अदाई का– दोनों पार्ट बजाये। मम्मा के मुख से जो वाक्य निकलते थे, राय-सलाह निकलती थी, सुनने वालों के लिए वे सब वरदान बन गये। सबको अनुभव होता था कि इसमें मम्मा का कोई स्वार्थ नहीं, वो तो हमारी भलाई के लिए ही इतनी मेहनत कर रही है। मम्मा को, दादा-परदादा की आयु वाले भी माँ कहते थे, अपनी हित-चिन्तक समझते थे। एक आदर्श माँ का काम होता है बच्चों को गुणवान बनाना और सभ्यता सिखाना। यह फ़र्ज मम्मा ने पूरा निभाया।

मम्मा का रूहानी रूप

मम्मा रोज़ मुरली ज़रूर पढ़ती थी अथवा टेप द्वारा सुनती थी। भले ही रात के 11 बजे हों लेकिन कल की मुरली सुनकर ही मम्मा सोती थी। जितनी अपने कर्त्तव्य पर पक्की रही उतनी ही ईश्वरीय पढ़ाई पर भी पक्की रही। हॉस्पिटल में भी मम्मा रोज़ मुरली सुनती थी। हमने मम्मा को सदा अलर्ट और एक्यूरेट (Alert and Accurate) देखा है। हमने कभी भी मम्मा की आँखें थकी हुईं नहीं देखी हैं। सदा उनके नयन बाबा की याद में मगन देखे हैं। मम्मा में नम्रता इतनी थी कि जब बाबा कहते थे– मात-पिता का याद-प्यार और नमस्ते, तब मम्मा अपने को माता नहीं समझती थी। ऊपर इशारा करते कहती थी कि उस मात-पिता का याद और प्यार है। मम्मा केवल ज़िम्मेवारी निभाने में, पालना देने में अपने को माता समझती थी। मम्मा ने माँ का पद स्वीकार नहीं किया परन्तु माँ का कर्त्तव्य स्वीकार कर उसको पूर्णरूपेण निभाया। बाबा के सामने वह एक छोटी, नन्हीं-सी बच्ची का रूप धारण कर लेती थी और यज्ञवत्स और भक्तों के सामने आदिदेवी जगदम्बा माँ का रूप धारण कर लेती थी। इतनी महान् थी हमारी माँ सरस्वती!

❁